



Review Article

एक जननायक के रूप में महाराजा छत्रसाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

रामेश्वर दुबे

पीएच. डी. शोधार्थी (इतिहास), शासकीय महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर (म. प्र.)

Corresponding Author: * रामेश्वर दुबे

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23014763>

सारांश

महाराजा छत्रसाल सच्चे स्वाधीनता प्रेमी थे। स्वाधीनता के भाव से ही उन्होंने मुगल सम्राटों के विरुद्ध लगातार युद्ध करके देश के धर्म, संस्कृति, उनके मूल्यों और प्रतीकों की रक्षा हेतु संघर्ष किया। दिल्ली दरबार से परिचालित होने वाले जन विरोधी निर्णयों के खिलाफ ही उनके पिता चंपतराय का विद्रोह था, जो आजीवन जारी रहा उसी को उनके सपूत छत्रसाल ने आगे बढ़ाया। स्वधर्म, स्वसंस्कृति तथा स्वराज्य के भाव पर भी पूरा बुन्देलखण्ड का जनसमर्थन उनके साथ था। छत्रसाल समस्त धर्मों तथा सम्प्रदायों में विश्वास करने वाले शासक थे। कुछ लोगों के द्वारा उन्हें विशिष्ट संप्रदाय का विरोधी या विशिष्ट संप्रदायों में बाँधने का प्रयत्न किया गया है, जिसके तहत कोई हरिदासी, सखी सम्प्रदायी या निम्बार्क सम्प्रदाय का मानता है।

प्रणामी धर्म के अनुयायी उन्हें पाँच स्वरूपों में से एक मानकर उनकी पूजा करते हैं। कुछ उन्हें कट्टर हिन्दू की उपाधि देने से नहीं चूकते जबकि ये सब तथ्य असत्य साबित होते हैं जब हम गहराई से विचार करते हैं। सच तो यह है कि उनका विरोध अत्याचारी मुसलमानों और हिन्दुओं दोनों से था। उन्होंने कभी कोई मस्जिद नहीं गिराई और न किसी मुस्लिम धर्मग्रंथ का अपमान किया वरन् फत्ते खान, नाहर खान, ईसफ खान आदि मुसलमानों को अपनी सेना में महत्वपूर्ण पदों पर रखा और युद्ध में मृत मुसलमानों की कब्रें तक बनवाई। असलियत यह है कि उस समय मुसलमानों की अन्यायी सत्ता का विरोध धर्म का विरोध हो गया था। छत्रसाल ने सत्ता का प्रतिकार किया किन्तु सत्ताहीन मुसलमानों को संरक्षण प्रदान किया। रचनाओं में साक्ष्य से वे राधा - कृष्ण, राम, देवी, शिव, हनुमान आदि सभी देवी-देवताओं के भक्त ठहरते हैं। वे सच्चे मायनों में एक उदार हिन्दू थे इसीलिए उन्होंने सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता और सम्मान का भाव रखा था।

इस तरह हम पाते हैं कि छत्रसाल सच्चे मायनों में राष्ट्रभक्त स्वाधीनता की आग को अपने अंतः में छिपाये वह योद्धा थे जिनकी तलवार व कलम के सामने समकालीन राजसत्ताएँ नत मस्तक थीं तथा उन्हें व्यापक जन समर्थन प्राप्त था।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 09-07-2026
- Accepted: 25-08-2026
- Published: 28-09-2026
- IJCRM:5(5); 2026: 422-427
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

दुबे रामेश्वर, . एक जननायक के रूप में महाराजा छत्रसाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(5):422-427.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

प्रमुख शब्द: महाराजा छत्रसाल; जननायक; बुन्देलखंड; स्वाधीनता संघर्ष; ऐतिहासिक व्यक्तित्व

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व को गौरान्वित करने, उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त करने तथा जीवन को उत्कृष्ट बनाने हेतु अनेक पुण्य और दिव्य आत्माओं ने इस पुनीत भारत भूमि पर जन्म लेकर इस धरा को गौरान्वित किया है। कहते हैं कि भगवान के 24 अवतार इस पुण्य भूमि पर ही हुए हैं। जिन्होंने अपने पावन चरित्र से विश्व के लोगों को सन्मार्ग देकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। इन्हीं दिव्य आत्माओं के अवतरण में राम, कृष्ण, शंकराचार्य, देवचंद्र, प्राणनाथ, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द आदि महापुरुष हुए हैं। जिनमें कुछ भगवान के रूप में अवतरित होकर जन जन के कल्याण हेतु अपने को समर्पित कर गए। ऐसे ही महापुरुष मध्ययुगीन काल में अवतरित हुए, जिनमें महाराजा छत्रसाल को एक वीर, साहसी बुन्देलखण्ड राज्य के संस्थापक के रूप में ही नहीं अपितु भारतवर्ष के एक बहुत बड़े भाग के लोग एक अवतार के रूप में भी मानते हैं और उन्हें अवतार मानकर उनकी पूजा अर्चना करते हैं।

श्री कृष्ण प्रणामी निजानन्द संप्रदाय में उन्हें अक्षरातीत परमात्मा की शक्ति से सम्पन्न सकुण्डल सखी का अवतार माना जाता है। प्रणामी मंदिरों में पूजा अर्चना के समय इनके नाम की जयध्वनि भी बोली जाती है।

अगर इन तथ्यों को कसौटी पर परखा जाये, तो समालोचन की दृष्टि से यह तथ्य की छत्रसाल महाराजा एक अवतार थे, उचित और समीचीन प्रतीत होता है। महाराजा छत्रसाल के गुरु महामहिम श्री प्राणनाथ जी को कल्कि अवतार माना जाता है। अतएव इन्हें भी परमात्मा की शक्ति का अवतार कहा जाता है। महाप्रभु प्राणनाथ का सानिध्य पाकर छत्रसाल ने न केवल बुन्देलखण्ड को बचाया अपितु राज्य संचालन के लिए पन्ना की हीरे की खां पाकर धन वैभव इकट्ठा कर सम्पूर्ण हिन्दू समाज की रक्षा की। तभी भूषण के मुख से निकल पड़े थे, ये शब्द -

“छता न होतो तो सुन्नत होती सबन की”

अवतार को यदि विश्लेषित किया जाये, तो राम कृष्ण, बुद्ध, महावीर स्वामी, मुहम्मद साहब, ईसा मसीह आदि इस धरा पर अवतरित होकर निम्न कार्य कर गये।

- (1) उन्होंने आतताइयों से मानव की रक्षा की।
 - (2) प्राणियों के दुखों का निवारण किया।
 - (3) प्राणियों को सन्मार्ग पर न केवल चलाया, अपितु चलकर रास्ता बताया।
 - (4) आदर्श साम्राज्य की स्थापना की।
 - (5) स्वयं कष्ट सहने पर अन्य प्राणियों की रक्षा की।
- उपर्युक्त कार्यों को करके इस धरा पर जन्म लेने पर सभी प्राणी यदि अवतार बन गये, तो महाराजा छत्रसाल भी इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। उन्हें एक अवतार मानना, समीचीन प्रतीत होता है। महाराजा छत्रसाल ने औरंगजेब जैसे आतताई से बुन्देल भूमि की रक्षा करने हेतु 252 लड़ाइयाँ लड़ीं। बुन्देलखण्ड को आपने कभी परतंत्र नहीं होने दिया और हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन नहीं होने दिया। महाराजा छत्रसाल गौ, ब्राह्मण, वेद रक्षक, उदार हृदय, दानी, शूरवीर, सहृदय, उदारमना, कला-काव्य प्रेमी थे। कवि हृदय होने के कारण ही तत्कालीन राष्ट्रकवि भूषण जब इनके राज्य में पधारे, तो इन्होंने श्रद्धा एवं आदर के साथ उनकी पालकी में अपना कंधा लगा दिया था।

छत्रसाल पर विजयभिनंदन बुद्ध महमति प्राणनाथ की ठीक उसी प्रकार कृपा थी जिस तरह वीर शिवाजी पर समर्थ गुरु रामदास की कृपा थी। महमति प्राणनाथ के कारण ही महाराजा छत्रसाल के द्वारा बुन्देलखण्ड का सर्वन्तोन्मुखी विकास हुआ, हिन्दू वैष्णव धर्म को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। विधर्मियों से धर्म की रक्षा हुई। ये सब गुण छत्रसाल को महाराजा छत्रसाल तथा एक अवतारी महापुरुष ही प्रकट करते हैं। छत्रसाल के द्वारा आदर्श और नीतिपरक भाष्य कविता के रूप में प्रस्तुत हुआ है, जो न केवल सशक्त अभिव्यक्ति मात्र है अपितु आचरणीय एवं जन मानस द्वारा माननीय है। एक उदाहरण देखिये

**लाख घटे कुल साख ने छोड़िये, वस्त्र फटे प्रभु औरहु हैं।
द्रव्य घटे घटता नहीं कीजिये, देह न कोऊ पै लोक हसै हैं।
भूप छता जलराशि को पैरिबो, कौनिहु बेर किनारे लगै हैं।
हिम्मत छोड़ें तै किस्मत जायेगी, जायगो काल कलंक न जै हैं।**

कहना न होगा कि महाराजा छत्रसाल एक परम उदात्त यशस्वी, प्रजापालक, भगवदभक्त, शूरवीर, धर्मनिष्ठ, कविहृदय, सद्चारित्र स्वातंत्र्य चेता के धनी शासक थे।

छत्रसाल का प्रारुभाव

महाराजा चंपत राय की तीसरी लाल कुंवरि (लाड़कुंवरि) नाम की रानी थी जिनका पीहर का नाम सारंधा था चम्पतराय उन्हें इसी नाम से पुकारते थे इतिहासकारों ने इस रानी को वीरांगना सारंधा (बसुंधरा) कहकर उल्लेख किया है इसी ईरानी की कोख से महाराजा छत्रसाल का जन्म बुन्देलखण्ड के टीकमगढ़ जिले के लिधौरा के समीप स्थित ककर कचनाये की मोर पहाड़ी में ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया वि. सं . 1706 तदनुसार 04 मई 1649 ई. को हुआ था ।

उस समय महाराजा छत्रसाल के पिता श्री चंपत राय जी मुगलों के अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करते हुए ओरछा के जंगलों में बागी का जीवन व्यतीत कर रहे थे। छत्रसाल उनकी चौथी संतान थे। चम्पतराय और माता लाड़कुंवरि की मृत्यु के उपरांत बारह साल की आयु में छत्रसाल इस संसार में अकेले पड़ गए थे। पिता के बागी होने के कारण दतिया, चंदेरी और ओरछा राज्य मुगलों के अनुगामी होने के कारण इनके शत्रु हो गए। इन बुरे दिनों में छत्रसाल के सगे-संबंधियों ने भी उनका साथ छोड़ दिया था। सहारा के धंधरे संबंधी होने के साथ अनेक अहसानों से दबे हुए थे किन्तु उन्होंने ही चंपतराय की वृद्धावस्था एवं रुग्णता की स्थिति देखकर उन पर प्राण घात की कोशिश की थी। इन विपरीत परिस्थितियों ने छत्रसाल के जीवन को परिपक्वता प्रदान की। पिता के देहावसान उपरांत छत्रसाल जब शरण हेतु यहाँ-वहाँ भटक रहे थे उस समय उनके पुरोहित ने उन्हें अनाथ समझकर द्रुतकार दिया था। निराश और ज्वर पीड़ित छत्रसाल जब अपनी बहन के पास गए तो राजकोप के डर से भाई को देखकर उसने दरवाजे बन्द कर लिए थे। ऐसी दुरावस्था में जब वे एक वृक्ष के नीचे अकेले व बेसहारा पड़े हुए थे तो नुना गांव की बरदिया कुम्हार की लड़की ने उन्हें पहचान कर अपने घर का मेहमान बना उनकी सेवा की। इसी दुर्दिनों में नुना गाँव के वृद्ध लल्लू गड़रिया ने छत्रसाल के अन्तःकरण में आत्म विश्वास और महानता के स्वप्नों का पौधा रोपा था किंवदन्ती है कि जंगल में वृक्ष के नीचे सोते समय छत्रसाल के मुख पर फनीले सर्प द्वारा छाया करके सूर्य की रोशनी को निवारित करते इसे लल्लू गड़रिया ने देखा था तथा जगने पर छत्रसाल को इस शुभ शकुन के बारे में बताया

था। इतना तो पूर्णतः सत्य है कि छत्रसाल ही हैं जिन्होंने केवल पच्चीस आदमियों की प्रारंभिक सैन्य टुकड़ी बनाकर दिल्ली के तख्त से संघर्ष का ऐलान किया और उसे एक नई ऊँचाई प्रदान कर बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता की अलख को जगाया। बरदिया कुम्हार की बेटी और लल्लू गड़रिया के साथ जिस महान् व्यक्ति ने छत्रसाल को प्रयत्न सहयोग देकर वीर योद्धा बनाया वह था महाबली तेली। कहते हैं कि महाबली तेली छत्रसाल के ननिहाल दैलवारा का रहने वाला था। उसने चंपतराय के साथ अनेक युद्धों में भाग लिया था। वह उनका विश्वासपात्र साथी था। जब चंपतराय शाही कोप से बचने के लिए जंगल-जंगल भटक रहे थे, उसी समय छत्रसाल की माता ने इसी तेली के पास कुछ गहने धरोहर के रूप में रख छोड़े थे। माता ने कह रखा था कि पुत्र को संकट के समय यह तुम सौंपना तथा उसकी सहायता करना। चंपतराय की मृत्यु उपरांत जब महाबली से छत्रसाल की भेंट हुई तो उसने उनकी माँ की धरोहर उन्हें सौंपते हुए कहा था कि ज्योतिष्यों

की भविष्य वाणी के अनुसार उन्हें शांत नहीं बैठना है बल्कि साहस के साथ संघर्ष का मार्ग चयन करना है। इसी ने बेरछा के पँवारों की बेटी देव कुँवर से विवाह तय कराकर ऐसे संबंधी ढूँढे थे, जो संकट के समय उनके साथ खड़े रह सकें।

महाराजा छत्रसाल का छत्रपति शिवाजी से सम्पर्क और औरंगजेब से संघर्ष

छत्रसाल प्रारंभिक दिनों में चाचा जामशाह के माध्यम से मिर्जा राजा जयसिंह से मिलकर उनकी सेना में नियुक्त होकर दक्षिण में युद्ध लड़ने को जाते हैं। यह काल दिसम्बर 1665 ई. से फरवरी 1666 ई. का रहता है जिसमें बीजापुर की लड़ाई में जयसिंह को विजय श्री दिलाते हैं और मुगल सेना के रीति - रिवाज समझते हैं। उन्होंने देखा कि इस सेना में दोगम दर्जे का व्यवहार किया जाता है तो मुगल सेना से शिकार खेलने के बहाने से वीर शिवाजी से मिलने पहुँच जाते हैं।



चित्र 1: महाराजा छत्रसाल और छत्रपति शिवाजी महाराज की भेंट

सन 1668 ई. में उन्होंने दक्षिण में छत्रपति शिवाजी से भेंट की, शिवाजी ने उनका हौसला बढ़ाते हुए उन्हें वापस बुन्देलखण्ड जाकर मुगलों से अपनी मातृभूमि स्वतंत्र कराने का निर्देश दिया।

शिवाजी ने छत्रसाल को उनके उद्देश्यों, गुणों और परिस्थितियों का आभास कराते हुए स्वतंत्र राज्य स्थापना की मंत्रणा दी एवं समर्थ गुरु रामदास के आशीर्षों सहित 'भवानी' तलवार भेंट की।

छत्रसाल ने वापिस अपने गृह क्षेत्र आकर मुगलों के खिलाफ संघर्ष की शुरुआत कर दी। इसमें उनको गुरु प्राणनाथ का बहुत साथ मिला। दक्षिण भारत में जो स्थान समर्थगुरु रामदास का है वही स्थान बुन्देलखंड में 'प्राणनाथ' का रहा है।

प्राणनाथ छत्रसाल के मार्ग दर्शक, आध्यात्मिक गुरु और विचारक थे। जिस प्रकार समर्थ गुरु रामदास के कुशल निर्देशन में छत्रपति शिवाजी ने अपने पौरुष, पराक्रम और चातुर्य से मुगलों के छक्के छुड़ा दिए थे। ठीक उसी प्रकार गुरु प्राणनाथ के मार्गदर्शन में छत्रसाल ने अपनी वीरता से, चातुर्यपूर्ण रणनीति से और कौशल से विदेशियों को परास्त किया।

राजा छत्रसाल ने औरंगजेब के साथ युद्ध में विजय प्राप्त की। औरंगजेब ने रणदूत के नेतृत्व में 30 हजार सैनिकों की टुकड़ी छत्रसाल के पीछे भेजी। लेकिन उसका भी कोई लाभ नहीं हुआ। उन्होंने अपने कौशल और युद्ध से मुगलों को पराजित कर दिया। क्योंकि छत्रसाल को मालूम हो गया था कि, मुगल उसे घेरने कि रणनीति तैयार कर रहे हैं। लेकिन उन्होंने उससे पहले ही उनकी रणनीति पर पानी डाल दिया। इससे पहले छत्रसाल के पिता चंपतराय मुगलों से धोखा खा चुके थे। इसलिए छत्रसाल ने अपने समय में कोई गलती नहीं की, उन्होंने मुगल सेना से गढ़ाकोटा, धामौनी, रामगढ़, कंजिया, मडियादो, रहली, रानगिरि, शाहगढ़ आदि कई जगहों पर लड़ाई लड़ी थी। जिसके बाद उनकी शक्ति बढ़ती चली गई।

महाराजा छत्रसाल का राज्याभिषेक

छत्रसाल के राष्ट्र प्रेम, वीरता और हिन्दुत्व के कारण छत्रसाल को भारी जन समर्थन प्राप्त था। छत्रसाल ने एक विशाल सेना तैयार कर ली जिसमें क्षेत्र के सभी राजपूत वंशों के योद्धा शामिल थे। इसमें 72 प्रमुख सरदार थे।

वसिया के युद्ध के बाद मुगलों ने भी छत्रसाल को 'राजा' की मान्यता प्रदान कर दी थी। उसके बाद महाराजा छत्रसाल ने 'कालिंजर का क़िला' भी जीता और मांधाता चौबे को क़िलेदार घोषित किया। महाराजा छत्रसाल ने 1678 में पन्ना में अपनी राजधानी स्थापित की और साधु - संतों, शुभचिन्तकों तथा जन समुदाय के बीच 38 वीं वर्षगांठ पर ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया, बुधवार वि. स. 1744 की गोधूलि बेला में राजतिलक समारोह हुआ जिसमें उनको महाराजाधिराज घोषित किया गया। इस तरह शून्य से की गई यात्रा महाराजाधिराज तक चली। वे राजकाज का काम पन्ना से संचालित करने लगे किन्तु सैन्य छावनी उन्होंने मऊ को ही बनाये रखा।

छत्रसाल के गुरु प्राणनाथ आजीवन हिन्दू मुस्लिम एकता के संदेश देते रहे। उनके द्वारा दिये गये उपदेश 'कुलजम स्वरूप' में एकत्र किये गये। पन्ना में प्राणनाथ का समाधि स्थल है जो अनुयायियों का तीर्थ स्थल है।

प्राणनाथ ने इस अंचल को रत्नगर्भा होने का वरदान दिया था। किंवदन्ती है कि जहाँ तक छत्रसाल के घोड़े की टापों के पदचाप बनी वह धरा धनधान्य, रत्न संपन्न हो गयी। छत्रसाल के विशाल राज्य के विस्तार के बारे में यह पंक्तियाँ गौरव के साथ दोहरायी जाती हैं
'इत यमुना उत नर्मदा इत चंबल उत टोस छत्रसाल सों लरन की रही न काहू हौस।'



चित्र 2: महाराजा छत्रसाल पुरातत्व संग्रहालय धुबेला, छतरपुर म. प्र.

बुंदेलखंड की शीर्ष उन्नति इन्हीं के काल में हुई। छत्रसाल के समय में बुंदेलखंड की सीमायें अत्यंत व्यापक हो गईं। इस प्रदेश में उत्तर प्रदेश के झाँसी, हमीरपुर, जालौन, बाँदा, मध्य प्रदेश के सागर, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, मण्डला, मालवा संघ के शिवपुरी, कटेरा, पिछोर, कोलारस, भिण्ड और मोण्डेर के ज़िले और परगने शामिल थे। छत्रसाल ने लगातार युद्धों और आपस में लूट मार से त्रस्त इस पिछड़े क्षेत्र को एक क्षेत्र के निचे लाकर वहाँ शांति स्थापित की जिससे बुंदेलखंड का पहली बार इतना विकास संभव हो सका। महाराजा छत्रसाल बुन्देला आजीवन अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु

तत्पर रहे, उनकी मृत्यु 82 वर्ष की अवस्था में 20 दिसम्बर 1731 ई. में लम्बी बीमारी के कारण हुई थी।

महाराजा छत्रसाल की समाधि छतरपुर में स्थित है। ये समाधि धुबेला झील के पास बनी हुई है जहाँ पर आसानी से पहुँचा जा सकता है। साथ ही उनकी समाधि के साथ वहाँ पर बहुत आलिशान मकबरा भी तैयार किया गया है जिसमें पहुँचने पर कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं, इसमें कई बड़ी गुम्बद तो कई छोटी गुम्बद बनी हुई हैं। पास में ही उनके घोड़े 'भले भाई' का स्मारक बना हुआ है। ऐसा माना जाता है कि महाराजा छत्रसाल की अंतिम यात्रा के बाद घोड़े ने भी शरीर त्याग दिया था।



चित्र 3: महाराजा छत्रसाल का मकबरा (छत्री), धुबेला



चित्र 4: घोड़े की समाधि

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. परमार बहादुर सिंह। **छत्रसाल रचना संचयन**। नई दिल्ली: ग्रंथ अकादमी; 2023।
2. सिंह कुंज बिहारी। **युग प्रवर्तक महाराजा छत्रसाल**। नई दिल्ली: श्री कृष्ण प्रणामी जनकल्याण समिति, रोहिणी; 2001. पृ. 7-8, 90।
3. संपूर्णानंद। **महाराजा छत्रसाल**। काशी: नागरी प्रचारिणी सभा; 1916।
4. पहुजा ओमप्रकाश। **कालजयी योद्धा छत्रसाल बुंदेला**। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2016।
5. गुप्त भगवान दास। **महाराजा छत्रसाल बुंदेला**। आगरा: शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी प्राइवेट लिमिटेड; 1958. पृ. 32-36, 102, 106, 119।
6. दुबे श्याम बिहारी। **बुंदेला इतिहास और महाराजा छत्रसाल**। नई दिल्ली: हर आनंद पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड; 2021।
7. विभिन्न शोध-पत्रों, पत्रिकाओं एवं पुरातात्विक स्थलों का शोधार्थी द्वारा किया गया प्रत्यक्ष सर्वेक्षण।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-Commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author



रामेश्वर दुबे शासकीय महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (मध्य प्रदेश) में इतिहास विषय के पीएच.डी. शोधार्थी हैं। इनकी शोध रुचियां क्षेत्रीय इतिहास, खजुराहो एवं आसपास के क्षेत्र में फैली पुरातात्विक संपदा पर केंद्रित है। इनका पीएच.डी. का शोध शीर्षक - "खजुराहो के मंदिरों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का शिल्पांकन" है। ये अकादमिक लेखन, शोध कार्य और इतिहास के गहन अध्ययन में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।